दाखिले की दौड़ में पिछड़ रहे सरकारी इंजीनियरिंग कालेज

तकनीकी शिक्षा

बढ़ते संस्थान, घटता रुझान

अशोक केडियाल • जागरण

देहरादून: एक जमाना था जब सरकारी इंजीनियरिंग कालेजों में प्रवेश के लिए मारामारी रहती थी। आसानी से दाखिला नहीं मिलता था। अब स्थिति इसके उलट है। अब सरकारी इंजीनियरिंग कालेजों में प्रवेश लेने वालों की संख्या में कमी आई है। स्थिति यह है कि वीर माधो सिंह भंडारी उत्तराखंड प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (यूटीयू) से संबद्ध 81 कालेजों में तीन चरण की काउंसलिंग के बाद भी तीन हजार से अधिक सीटें खाली रह गई हैं। वैश्विक स्तर पर उपयोगी पीजी डिप्लोमा इन साइबर सिक्योरिटी जैसे पाठ्यक्रम की सीटों के लिए भी छात्र नहीं मिल रहे हैं। विशेषज्ञ इसका कारण में जेईई मैन की परीक्षा के कारण छात्रों का पलायन, सेवायोजन के अवसर न होना, निर्माण क्षेत्र का विस्तार न होना और इंजीनियरिंग कालेजों की बढ़ी संख्या को मान रहे हैं।

वीर माधो सिंह भंडारी उत्तराखंड प्रौद्योगिकी विवि से संबद्ध राजकीय इंजीनियरिंग कालेज, कैंपस परिसर और स्ववित्तपोषित पोषित संस्थानों में बीटेक-एमटेक से लेकर एमबीए, एमसीए, बीबीए, बीसीए, एलएलबी, एमएचएम, साइबर सिक्योरिटी जैसे विषयों में 14500 सीटें निर्धारित हैं। इनमें अभी भी तीन हजार से अधिक सीटें रिक्त हैं। 31 अगस्त तक स्पाट राउंड से छात्रों को सीधे प्रवेश का का मौका दिया जा रहा है।

- तीन चरण की काउंसलिंग के बाद भी यूटीयू की तीन हजार सीटें रिक्त
- सरकारी कालेजों में सुविधाएं बढ़ाने के बाद भी घट रही युवाओं की चाहत
- वीर माधो सिंह भंडारी प्रौद्योगिकी विवि से संबद्ध 81 संस्थानों में हैं 14,500 सीटें

इन आधुनिक सुविधाओं की दरकार

- दक्ष और विशेषज्ञ फैकल्टी
- नवाचार और शोध कार्यों का विस्तार
- स्टार्टअप और स्किल डेवलपमेंट पर विशेष जोर
- प्लेसमेंट सैल को अधिक उपयोगी और कारगर बनाना
- वैश्विक तकनीकी प्रसार के लिए गैस्ट फैकल्टी की व्यवस्था
- राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सेमीनार से छात्र-छात्राओं का जुड़ाव
- संस्थान में पुस्तकालय, ई-जर्नल, वाइफाइ की सुविधा

हमें सबसे पहले दक्ष फैकल्टी की नियुक्ति करनी होगी। हमारे इंजीनियरिंग कालेजों में नियमित फैकल्टी नहीं हैं, जिससे पढ़ाई प्रभवित होती है। जो शिक्षक हैं वह बहुत अधिक दक्षता के साथ पठन-पाठन की योग्यता नहीं रखते हैं। दूसरा कारण जेईई मैन की परीक्षा के कारण ज्यादातर प्रतिभावान छात्र सीधे राष्ट्रीय स्तर पर चुने जाते हैं। वह देश के टाप इंजीनियरिंग कालेज में प्रवेश लेते हैं। ऐसे में राज्य में छात्रों की संख्या कम होना स्वाभाविक है, हमें पेशेवर इंजीनियर तैयार करने होंगे।

- डा. यूएस रावत, पूर्व कुलपति, यूटीयू और श्रीदेव सुमन उत्तराखंड विवि

इसके दो बड़े कारण है। एक तो निर्माण क्षेत्र का विस्तार धीरे-धीरे कम हो रहा है और इंजीनियरिंग करने वाले छात्रों की संख्या साल दर साल बढ़ती जा रही है। इंडस्ट्री सेक्टर को प्लेसमेंट सैल का सपोर्ट करना होगा, अभी इंजीनियरिंग सेक्टर में रोजगार के अवसर बढ़ सकते हैं। आज देश में जितने इंजीनियर प्रतिवर्ष पासआउट हो रहे हैं उसके सापेक्ष रोजगार के अवसर नहीं है।

- प्रो. ओंकार सिंह, कुलपति यूटीयू